सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - ऊर्जा (पंचम)

Vibrant Pushti

" जय श्री कृष्ण "

हे अर्थोपार्जन क्रिया!

न उकसा मुझे ऐसी वृत्ति से जो मैं खुद को न पहचानु साथ साथ मेरे कुटुंब साथी को न पहचानु

हे कुटुंब!

मुझे ऐसे न धकेलो जिससे मैं मेरा जन्म, संस्कार और धर्म भूल जाऊँ

हे रिश्तेदार!

मुझे ऐसे न घडो जिससे मैं मेरी प्राथमिक कौटुंबिक आत्मीयता, जन्म योग्यता, जीवन सार्थकता और ऋणात्मकता को निष्ठुर कर दूँ

हे स्वार्थ

मुझे क्या क्या करवाता है,

मुझे क्या क्या बना दिया,

मुझसे क्या क्या घवाँ दिया,

मुझे कहा कहा धकेल दिया

मुझे क्या क्या भूला दिया

मुझे न जन्म, संस्कार, पुरुषार्थ, जीवन, धर्म और अंश, सर्व आध्यात्मिकता से विखुटा कर दिया

ओहह! तुट गया

ओहह! बिखर गया

ओहह! भटक गया

ओहह! भूल गया

ओहह! डूब गया

ओहह! छूट गया

ओहह! नष्ट हो गया

ओहह! भ्रष्ट हो गया

नही नही! मुझे माफ करदो

हे मेरे जीवन साथीओ

अब न भूलूंगा

अब न खोऊँगा

अब न भटकुंगा

अब न बिछडुंगा

अब न घवाऊंगा

मुझे किसको दिखाना है!

मुझे किसको प्रमाणित करना है!

मुझे किसको बताना है!

मुझे किसको जगाना है!

मुझे किससे तुलना करनी है!

मुझे किससे ऊँचा दिखाना है!

मुझे किसको निचा साबित करना है!

मुझे क्या बांधना है?

मुझे क्या पाना है?

सत्य तो यही ही है

जहाँ हमने जन्म पाया वही साथी, वही व्यक्ति, वही संस्कार, वही धर्म, वही कर्म, वही पुरुषार्थ से हम सदा जागृत रहे तो जन्म जीवन सार्थक हो जाय - सफल हो जाय

" Vibrant Pushti "

वेद पढ सकते है वेदना नही

वेद समझ सकते है वेदना नही

यह कैसे कह सकते है!

बस यूँ ही कह दिया!

या बहोत समझ कर कहा

न समझे वेद

वह कैसे समझे वेदना

जो समझे वेद

वह समझे हर प्रकार से वेदना

जो समझे है वेद

वह दूर करे हर वेदना

आज जो है वेदना

वो न समझे है वेद

सदा रहते है खेद

आज जो है वेदना

नही पहचानी है वेद

कैसे कटेंगे खेद

आज जो है वेदना

है बहोत बडा वो खेद

जिसने जीया बिना सिद्धांत वेद

आज जो है वेदना जिसके सर

नही संवारा वेद उनके उपर

सदा सहारा वेद का

मारा असुर सदा वेदना का

सदा आधार वेद का

भागे अंध अज्ञान वेदना का

" Vibrant Pushti "
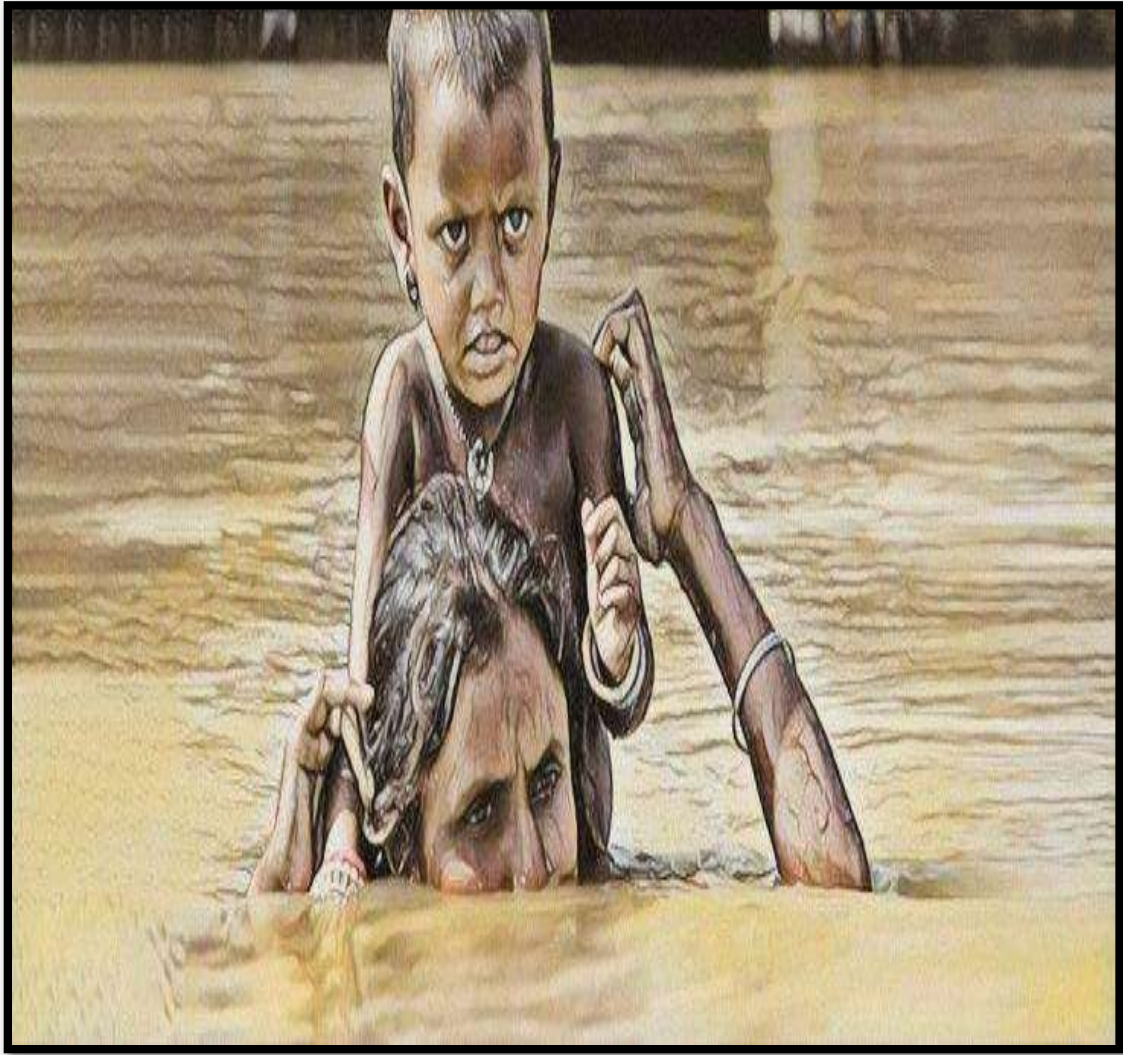
"माता पिता पुत्र पुत्री"

क्या संबंध है?

क्या बंधन है?

क्या ऋणात्मकता है?

क्या आत्मीयता है?

क्या प्रीतता है?

क्या एकात्मता है?

क्या एकरुपता है?

क्या साम्यता है?

क्या समानता है?

क्या समन्वय है?

क्या औषधक्ता है?

क्या समाविष्टता है?

क्या युक्ता है?

क्या विशिष्टता है?

क्या विश्वनीयता है?

क्या नित्यता है?

क्या पूर्णता है?

क्या समर्पणता है?

क्या अधिकारिता है?

क्या सर्वाधिकता है?

क्या धर्मिष्ठा है?

क्या पवित्रता है?

क्या अभिन्नता है?

क्या सत्यता है?

क्या निर्मोहता है?

क्या निराकारता है?

क्या साक्षरता है?

क्या निकटता है?

क्या न्योछावरता है?

क्या शरणता है?

क्या विशुद्धता है?

क्या सरलता है?

क्या सहजता है?

क्या निर्मलता है?

क्या अतूटता है?

क्या अनंतता है?

क्या अखंडता है?

क्या अविचलता है?

क्या विरलता है?

सच! क्या है जिससे जन्मोजन्म तक - जीवन जन्मांतर तक - जन्म जीवन अंत तक यह ऋणात्मकता परम परमात्मा के एकात्म तक जुडता ही रहता है।

हम संसारी

हम जागतिक

हम प्राकृतिक

हम तात्विक

हम आध्यात्मिक

हम परिवर्तित

हम मानसिक

हम कुछ भी हो पर यह ऋणात्मकता से सदा जुडते जुडते योग्यता की ओर गति करते रहेंगे तो हम यही ही ऋणात्मकता से परमात्मता धर सकते है और अनंतता पा सकते है।

हम चाहे कितनी ही बार जन्म जीवन धरते उन्हीं के साथ हम कैसा भी व्यवहार और आचरण करे, हम कितने पैसे, मिलकत, धन दौलत, नाम, शौहरत, जर झवेरात पाये, आखिर तो हम न कुछ ले सकते है या छिन सकते है या लुट सकते है - या छल कपट कर सकते है।

यह सत्य है।

" Vibrant Pushti "

हमारे वेद - हमारी संस्कृति

हमारा आध्यात्मिक - हमारी भक्ति

से प्रकट हुए हर अक्षर - शब्द और सूत्र स्वरुप साकारत्व धारण करते है, यही अक्षर - शब्द और सूत्र का अविरत चिंतन और स्मरण करते रहते यह स्वरुप प्रथम हमारे मन में उजागर होते है - यही मानसिकता से उत्स हुए स्वरुप अधिक द्रढता से और सत्य भाव ज्ञान से चिंतन और स्मरण करते रहने से अपने तन में वही स्वरुप उजागर होता है, यही अक्षर - शब्द और सूत्र का अखंडित चिंतन और स्मरण अति जिज्ञासा और तीव्रता से करते रहने से हमारे धन अर्थात हमारे कर्म में भी यही ही स्वरुप उजागर होता है।

यह मन - तन और धन में उत्स हुआ स्वरुप हमें स्व की ओर गति करता है और हम स्वयं यही स्वरुप में परिवर्तित हो जाते है।

यह स्व स्वरुप से सेवा का पार्दूभाव करना ही योग्य पुरुषार्थ है।

जैसे आज हम श्री विवेकानंद का चरित्र समझे

जैसे आज हम श्री मीराबाई का चरित्र समझे

" Vibrant Pushti "

"पतंग"

पत + अंग = पतंग

पत - लाज

मेरी पत राखो गिरधारी

अर्थात

मेरा "स्व" रखना

मेरा अस्तित्व रखना

अंग - मेरा सर्वस्व

ओहह कितना अदभुत!

"पतंग"

हम क्या है?

हम कौन है?

हम क्यूँ यहां है?

हमें क्या पुरुषार्थ करना है?

यह हमें यह पतंग भी जता रहा है

पतंग उत्सव की सबको बधाई

सब अपने अपने पुरुषार्थ से अपनी पतंग को संभाले

सब अपनी अपनी विद्या से अपनी पतंग दौराये

सब अपनी अपनी मान्यता से अपनी पतंग मिलाये

सब अपने अपने ख्यालों से अपनी पतंग उडाये

सब अपने अपने संस्कारों से अपनी पतंग रक्षाये

हे पतंग! ऐसा संवरना

जो हर कोई में ऐसा एकत्व होना की

हर कोई कुछ सही पाये

" Vibrant Pushti "

"पतंग और धागा या दोर"

"धागा"

"धा" अर्थात धारण करना अर्थात हम जो जो समय में, जो जो परिस्थिति में जो जो धारण करते करते जीते है वह "धा" - धारणा जो द्रड होती है, मजबूत रहती है। यही धारणा को "गा" अर्थात गति देना। यह "धा" को "गा" करना धागा। जो हमारी पतंग के साथ बांध कर या जुड कर हमारी पतंग को यह जगत रुपी संसार में उडाये - गति कराये

संभल संभल कर,

संवार संवार कर,

सलामत सलामत कर

यही है पतंग धागा या दोर का संबंध,

यही ही है पतंग और धागा या दोर की पहचान।

इसलिए तो तु दोर मैं पतंग

इसलिए तो मैं दोर तु पतंग

इसलिए तो प्रीत दोर प्रेम पतंग

" Vibrant Pushti "

"रास्ता"

हमने रास्ता देखा है?

हमने रास्ता जाना है?

हमने रास्ता समझा है?

हमने रास्ता पहचाना है?

हम रास्ते पर चलते है?

हम रास्ते के वाहन चालक है?

हम रास्ते के दिशा सूचक है?

हम रास्ते के मार्गदर्शक है?

हम रास्ते के मंजिल साधक है?

हम रास्ते के गति धारक है?

हम रास्ते के संज्ञा वाचक है?

हम रास्ते के सरल चालक है?

हम रास्ते के संज्ञा पालक है?

हम रास्ते के असमंजस रक्षक है?

हम रास्ते के माहिती वाचक है?

हम रास्ते के वाहन नियामक है?

हम रास्ते के आकस्मिक हंकारक है?

हम रास्ते के माध्यमिक राही है?

हम रास्ते के सहयोगी है?

हम रास्ते के राहदारी है?

हम रास्ते के सहचालक है?

हम रास्ते के सहायक है?

हम रास्ते के निर्देशक है?

हम रास्ते के संचालक है?

हम रास्ते के नियामक है?

हम रास्ते के संस्थापक है?

हम रास्ते के अवरोधक है?

हम रास्ते के विरोधक है?

हम रास्ते के शाशक है?

हम रास्ते के भूलभूलायक है?

हम रास्ते भटक भटक है?

सोच लो!

हमारा रास्ता है?

हमारी मंजिल है?

हमारी दिशा है?

हमारी गति है?

हम राहगीर है?

हम राहदारी है?

हम क्या है?

बस यूँ ही चलते रहते है

बस यूँ ही चलाते रहते है

बस यूँ ही ....

" Vibrant Pushti "

यह अंश और अंशी का खेल

सच में अलौकिक निराला है

अंश कभी भी अंशी से बिछड नही सकता

अंशी कभी भी अंश से बिछड नही सकता

अंश कैसे भी भिन्न हो

अंशी कैसा भी अभिन्न हो

अंश कितना भी अलग हो

अंशी सदा विलग है

अंश कितना भी दूर हो

अंशी सदा साथ है

अंश कितना भी अज्ञान धरे

अंशी निरंतर प्रज्ञान ही धरे

अंश चाहे अंधकार में रहे

अंशी सदा प्रज्वलित ही रहे

अंश कितना विधर्म में डूबे

अंशी सदा धर्म से तैराये

अंश कितना भी कुकर्म करे

अंशी सदा सत्कर्म ही करे

अंश कितना भी अन्याय करे

अंशी सदा न्याय ही करे

अंश कितना भी अविश्वास अपनाये

अंशी सदा विश्वास ही जगाये

अंश कितना भी स्वार्थी बने

अंशी सदा निस्वार्थ ही है

अंश कितना भी दुराचारी हो

अंशी सदा सदाचारी ही है

अंश कितना भी कपट रचे

अंशी सदा निष्कपट ही रचे

अंश को तो आखिर समाना ही है अंशी में

अंशी को तो आखिर घडना ही है एकात्म के लिए

यही ही सिद्धांत है अंश अंशी के खेल का

" Vibrant Pushti "

हमारा भारत देश "सोने की चिडिया" कहलाता था

क्यूँ?

"सोने" से हम प्रथम अर्थ स्पर्श करते है

"सोने" अर्थात " सोना" अर्थात एक सर्वोच्च ऐसा प्रमाण, सदा प्रमाण सर्वत्र से प्रमाणित और सही हो।

यह जगत और संसार में "सोना" एक ऐसी धातु है जो सर्वथा से उचित है, यथा योग्य है।

यह "सोना" को हम कहीं प्रकार से हम इनकी तुलना करते है।

मेरा सोना जैसा साथी

मेरा सोना जैसा कुटुंब

मेरा सोना जैसा संबंध

मेरा सोना जैसा शिक्षण

मेरा सोना जैसा संस्कार

मेरा सोना जैसा स्वभाव

मेरा सोना जैसा मन

मेरा सोना जैसा तन

मेरा सोना जैसा धन

मेरा सोना जैसा व्यवहार

मेरा सोना जैसा विचार

मेरा सोना जैसा कार्य

मेरा सोना जैसा जीवन

मेरा सोना जैसा मान सन्मान

मेरा सोना जैसा धर्म

मेरा सोना जैसा कर्म

मेरा सोना जैसा अर्थोपार्जन

मेरा सोना जैसा नाम

मेरा सोना जैसा काम

मेरा सोना जैसा धाम

मेरा सोना जैसा वचन

मेरा सोना जैसा …………

हर विचार

हर स्वर

हर अक्षर

हर संकेत

हर निधि

हर सिद्धि

हर उपाधि

हर कक्षा

हर व्यवस्था

हर स्पर्श

हर वृत्ति

हर चित

हर मात्रा

हर द्रष्टि

हर कृति

हर स्वीकृति

हर नित्य

हर नूतन

हर तत्व

हर भाव

हर ज्ञान

अर्थात विश्वसनीय, पवित्र, विशुद्ध, सत्य, आनंद सभर ही यह तुलना है।

जो अदभुत है

जो अलौकिक है

जो अकल्पनीय है

जो अप्रतिम है

जो अवर्णनीय है

जो अद्वैत है

जो अद्वितीय है

जो सर्वथा सन्मानीत है

जो परम श्रेष्ठ है

जो सर्व श्रेष्ठ मान्यता है

जो सर्वथा स्वीकार्य है

जो सर्वथा से उत्तीर्ण है

यह सर्वज्ञ भारत के अस्तित्व में था

यह सर्वज्ञ भारत के सिद्धांत में था

यह सर्वज्ञ भारत के काल में था

यह सर्वज्ञ भारत के योग में था

यह सर्वज्ञ भारत के धर्म में था

यह सर्वज्ञ भारत के सहिष्णुता में था

यह सर्वज्ञ भारत के आध्यात्म में था

यह सर्वज्ञ भारत के सनातन में था

यह सर्वज्ञ भारत के बंधारण में था

यह सर्वज्ञ भारत के एकत्व में था

यह सर्वज्ञ भारत के प्रज्ञान में था

यह सर्वज्ञ भारत के धर्म निरपेक्षता में था

यह सर्वज्ञ भारत के तत्वों में था

यह सर्वज्ञ भारत के संस्कृत में था

यह सर्वज्ञ भारत के आधार में था

हाँ!   यही सर्वस्थ से भारत सोने की चिडिया था।

" Vibrant Pushti "

हमारी संस्कृति आधारित

वेद में ज्ञान विज्ञान और प्रज्ञान है

जो यही सृष्टि - ब्रहमांड - प्रकृति से ही हर जीव - आत्मा कुछ न कुछ ढूँढता रहता है - परिवर्तन करता रहता है - वृद्धि पाता रहता है।

यह कुछ न कुछ ढूँढना

यह उनका मन - तन और धन है

यह परिवर्तन करता रहना

यह उनका स्वभाव और पुरुषार्थ है

यह वृद्धत्व पाना

यह उनकी कक्षा और प्रमाण है

यह ढूँढते

यह परिवर्तनते

यह वृद्धत्वसे

यह जीव कितने ही सिद्धांत प्रमाणित करता है

यही ही प्रमाण जो योग्य दिशा पर सूक्ष्मता से अति गहराई से अध्ययन करके जो पाये यह फलश्रुती को उनके जीव जन्म जीवन को शुद्ध पुरुषार्थ कहते है

ऐसे ही कहीं पुरुषार्थ सृष्टि - ब्रहमांड और प्रकृति के लिए धर्म संस्थापन होता है

यही धर्म संस्थापन कहीं जीवों को ढूंढने - परिवर्तन के - वृद्धत्व के प्रति ज्ञान की गंगा और भाव की यमुना से जीवन कृतकृत करते है।

" Vibrant Pushti "

जैसे मेरा मन है

वैसा कहींओ का भी मन है

जैसे मेरा तन है

वैसा कहींओ का भी तन है

जैसे मैं सोचता हूँ

वैसा कहीं भी सोचते है

जैसे मैं अर्थ करता हूँ

ऐसा कहींओ भी अर्थ करते है

जैसे मैं कार्य करता हूँ

ऐसा सर्वे कहीं कार्य करते है

जैसे मैं पुरुषार्थ करता हूँ

ऐसे कहींओ भी पुरुषार्थ करते है

क्या यही ही प्रकृति से

हर कोई भिन्न भिन्न रहते है

और

जीवन - परिवर्तन - ध्येय - की संपूर्णता को पाने के लिए कहीं पद्धति से जीते है।

पर यह भिन्नता से जीना और रहना में, क्या जीवन की सार्थकता - साक्षरता - सैद्धांतिकता का पार्दूभाव ऐसे ही होता है?

क्यूँकि !

कोई उपकारता है

कोई तिरस्कृता है

कोई तुलता है

कोई दंभता है

कोई मदता है

कोई निम्नता है

कोई धुत्कारता है

कोई आलोचता है

कोई प्रलोभनता है

कोई डराता है

कोई घमंडता है

कोई तोडता है

कोई नफरतता है

कोई कलंकता है

कोई घुमाता है

कोई तडपाता है

कोई तरसाता है

कोई दंडता है

कोई असंमंजसता है

कोई असामर्थ्यता है

कोई अस्थिरता है

कोई भागता है

कोई डरता है

कोई विघटनता है

कोई सूचनता है

कोई मार्गदर्शकता है

कोई स्वार्थता है

कोई लूटता है

कोई विस्मयता है

यह कहना नकारात्मकता के लिए नही है

यह तो आज जो है और हो रहा है और जो कर रहे है और जो अनुभव रहे है इसलिए कहते है

हर कोई ऐसा!

न कहना कलयुग है

न कहना काल ऐसा है

न कहना संजोग ऐसे है

न कहना समय ऐसा है

न कहना स्वभाव ऐसा है

न कहना प्रकृति रुठी है

न कहना कालचक्र ऐसा है

न कहना भुगतना है

न कहना जैसा कर्म ऐसी फलश्रुती

न कहना नसीब ऐसा है

न कहना भाग्य में लिखा है

न कहना प्रकोप है

न कहना दोषीत है

न कहना शापित है

अचूक चिंतन करना

अचूक अध्ययन करना

अचूक समाधि धरना

अचूक स्थिर होना

क्यूँ ऐसा?

क्यूँ हम ऐसे?

" Vibrant Pushti "

मानव शरीर धरने का दिन

सृष्टि को पहचानने का दिन

प्रकृति को स्पर्शने का दिन

पंचमहाभूत तत्वों का समन्वय दिन

पृथ्वी पर पुरुषार्थ का प्रारंभ दिन

मातपिता के वात्सल्य को लूटने का दिन

कुटुंब के संबंध को जुडने का दिन

जात पात पाने का दिन

देशवासी होने का दिन

धर्म बंधन से बंधने का दिन

समाज से रिश्ता जोडने का दिन

संसार से संशोधन करने का दिन

दुनिया से दूरियाँ मिटाने का दिन

जगत से नाता पाने का दिन

ज्ञान विज्ञान से तत्व परिवर्तन करने का दिन

भाव भक्ति सिंचन करने का दिन

अंशी से एकात्मता संवरने का दिन

सिद्ध सिद्धांत को प्रमाणित करने का दिन

प्रीत प्रेम का न्योछावर दिन

खुदको खुद से सार्थक करने का दिन

अंश से अंशी में परिवर्तन करने का दिन

घट घट योग्य करने का दिन

अजन्मा सिद्धि सिद्धने का दिन

प्रमेय सिद्धांत सिद्ध करने का दिन

आनंद को हर काल में लूटाने का दिन

तन मन धन को साधन सिद्ध साक्षरने का दिन

हाँ! यही ही है हमारे हर जन्मदिन की परिक्षण का दिन

" Vibrant Pushti "

क्या चाहिए मुझे?

ओहह! कितने संकल्प

ओहह! कितनी इच्छा

ओहह! कितनी आश

ओहह! कितना आयोजन

ओहह! कितने विकल्प

ओहह! कितने तुक्के

ओहह! कितने सपने

ओहह! कितनी व्यवस्था

ओहह! कितने उद्यम

ओहह! कितने उधामा

ओहह! कितनी तहस नहस

ओहह! कितने विचार

ओहह! कितनी बातें

ओहह! कितनी रीतें

ओहह! कितने आकुल

ओहह! कितने व्याकुल

ओहह! कितने रास्ते

ओहह! कितना झिझकना

ओहह! कितना भटकना

ओहह! कितना मानना

ओहह! कितना अपनाना

ओहह! कितना अवेहलना

ओहह! कितना अजमाना

ओहह! कितना जुडना

ओहह! कितना भूलना

ओहह! कितना छूपाना

ओहह! कितना न कहना

ओहह! कितना बोलना

ओहह! कितना सिखाना

ओहह! कितनी सलाह

ओहह! कितने सूचने

ओहह! कितना अवांछिना

ओहह! कितना अगम्य

ओहह! कितनी निराशा

ओहह! कितनी अभिलाषा

ओहह! कितने अर्थ

ओहह! कितने तर्क

ओहह! कितना मनाना

ओहह! कितना धमकाना

ओहह! कितना आलाप

ओहह! कितना आलोचना

ओहह! कितना परिक्षण

ओहह! कितना टटोलना

ओहह! कितना विवेचना

ओहह! कितना मुझाना

ओहह! कितना भागना

ओहह! कितना दौडना

ओहह! कितना संभलना

ओहह! कितनी विडंबना

ओहह! कितना द्रडना

हाँ! कितनी कितने और कितना

तो भी नही नक्की कर सका क्या चाहिए?

" Vibrant Pushti "
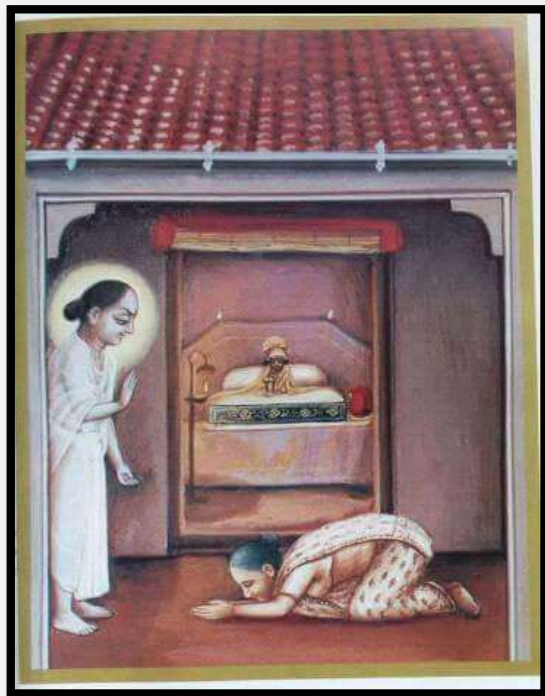
"गणतंत्र दिवस" की सर्वे को बधाई

हम अखंड भारत देश के अतुल्य नागरिक एवं सेवक है। हम सर्वे ने जन्म पाया यह पुष्ट भूमि पर। कर्म भूमि और पुरुषार्थ धरती से जो सीखा, समझा, पहचाना, जिससे जो भी हूँ, इस मातृभूमि से।

आज मैंने जितना भी समझा और अनुभव पाया है, वोही अनुसंधान से मैं इतना अचूक कह सकता हूँ और कर सकता हूँ जिससे मेरा यह देश विशुद्ध, विकासशील, समृद्ध, और वैज्ञानिक हो।

आज जो मुझमें समझ और पहचान है मेरे देश के वातावरण और परिस्थिति की जो मुझे बार बार कह रही है - हे मेरे सपूत! आज यह गणतंत्र उत्सव दिवस है, जो तुझे संकल्प करने की प्रेरणा दी रही है -

जाग! मेरे सपूत जाग! यह असहिष्णुता, असामाजिक, अशिक्षित, अंधाधुंध राजकारण से, यह निर्लज्ज, अल्प शिक्षित, कपटी, स्वार्थी राजनीति और बुद्धिजीवीओं से, जो मुझे कंगाल और अयोग्य कर रहे है, यह परिस्थिति से मुझे योग्य और व्यवस्थित कर।

अभी जो सरकार सारे देश का कार्य संभाल रही है, वही सरकार निर्लेप सेवक हो कर काम कर रही है, उन्हें फिर से हमारी राष्ट्रीय कृतकृत्य के लिए उतीर्ण करने हम सर्वे साथ साथ एक हो कर हमारी आन बान और शान का तिरंगा लहराये।

" Vibrant Pushti "

दान - दाता - सेवा - योजना - निवेश - सलाहकार - समाज सुधारक - आयोजक - प्रतिष्ठा - नाम

मांग - मदद - करज - ऋण - गरीब - देवादार - उधार - शाहुकार

व्यवहार - व्यापार - विकास - शिक्षण - संस्था

भारत देश और भारत देशवासी और भारत विदेशी - समाज निवेशी

ओहह! थक गया भाई थक गया।

सच में थक गया।

हम कैसे?

कैसे है हम?

ओहह! क्या करे!

" Vibrant Pushti "

आकाश कभी सोया है?

धरती कभी सोयी है?

सूरज कभी सोया है?

हवा कभी सोयी है?

सागर कभी सोया है?

वनस्पति कभी सोयी है?

नदी कभी सोयी है?

आत्मा कभी सोया है?

धडकन कभी सोयी है?

साँस कभी सोयी है?

हम पंच महातत्वों से ही है

तो हम ....

सोच लो!

हम क्या है? क्यूँ हमारा ऐसा होता रहता है?

" Vibrant Pushti "

मुझे मेरी सच्चाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी परछाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी अच्छाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी बुराई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी गुन्हाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी उंचाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी गहराई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी करजई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी खुदाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी गूँजाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी चुराई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी छिपाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी जगाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी ऋग्णाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी भरपाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी भुगताई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी सहाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी निभाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी इकाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी सफाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी रचाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी प्रेमाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी छलाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी गुणाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी पुष्टाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी विखुटाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी बुझाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी अखंडाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी जन्माई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी तनहाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी एकत्माई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी शरमाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी रुस्वाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी ब्रहमाई क्या है?

नही पता

मुझे मेरी शरणाई क्या है?

नही पता

हे इश्वर! मुझे सदा तेरी जुदाई क्या है?

नही पता

यही सांवराई मुझमें जगा

है प्रार्थना करु तुझसे सदा

" Vibrant Pushti "

इन्सान है हम

यह ही इन्सान को जो जीवन प्रदान होता है, वह जीवन में उन्हें एक अलौकिक शिक्षा की व्यवस्था भी प्राप्त होती है, यह शिक्षा है परिणय संस्कार, यह संस्कार से वह जीवन से इतनी अलौकिकता पाता है जो स्वर्ग से भी श्रेष्ठ और गोलोक धाम से भी सर्वोच्च सकल विद्या और सकल सिद्धि पा सकता है।

जो तन में पवित्रता और मन में पारदरशॅकता और धन में विशुद्धता को निरुपीत करदे।

तन सोप दिया

मन सोप दिया

धन सोप दिया

यह तन सोप दिया का अर्थ है - पुरुषार्थ करने का साधन

यह मन सोप दिया का अर्थ है-

स्थितिप्रज्ञ होना

यह धन सोप दिया का अर्थ है -

पुरुषार्थ करने का साधन

इसलिए

तन सोप दिया

मन सोप दिया

धन सोप दिया

किसको सोप दिया?

उन्हें जो निर्मोहता है

उन्हें जो निर्लेप है

उन्हें जो निर्दोष है

उन्हें जो निष्काम है

उन्हें जो नि:संदेह है

उन्हें जो निष्कपट है

यह विद्या और सिद्धि पति या पत्नी अपने तन - मन और धन से पा सकते है।

" Vibrant Pushti "
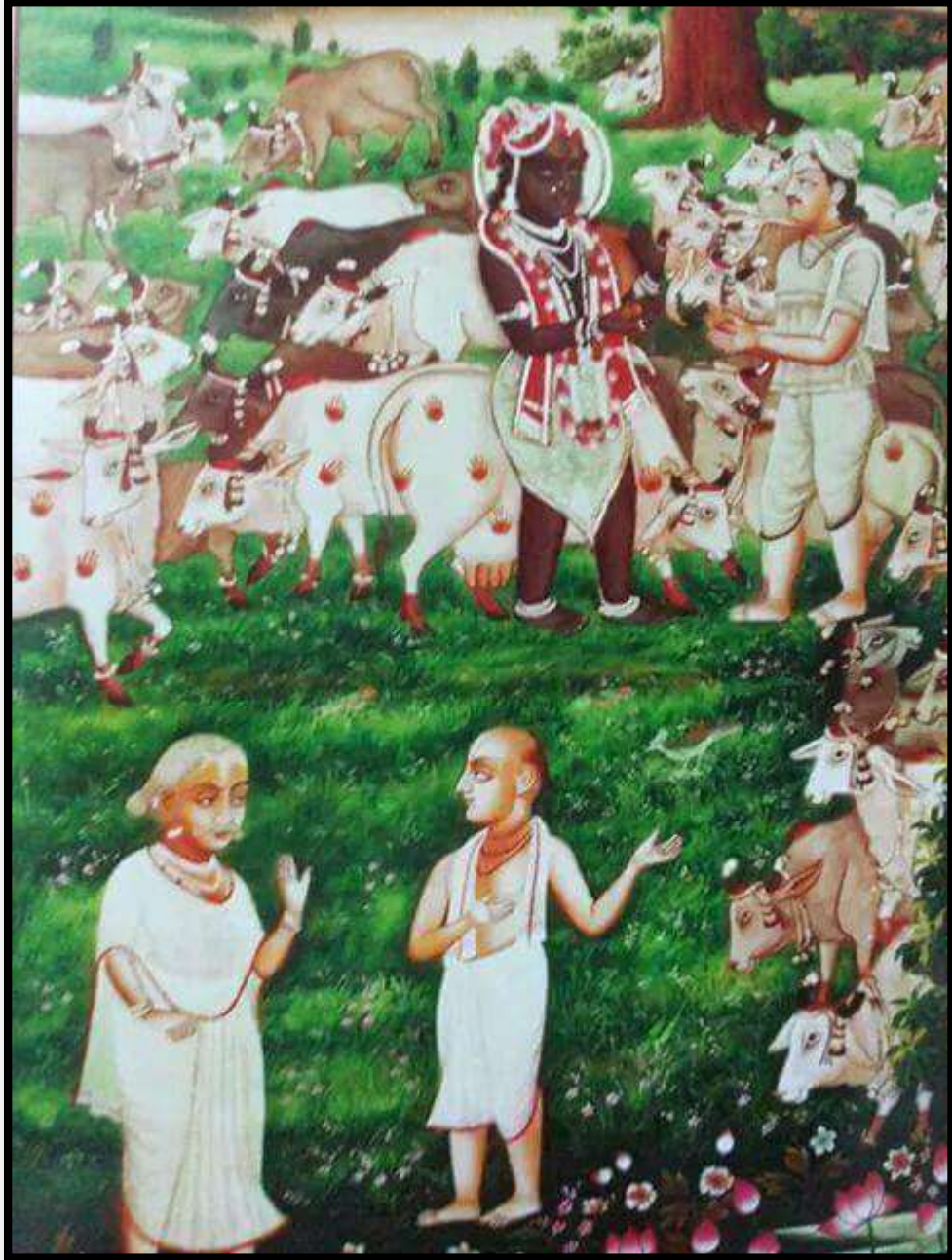
कहीं प्रकार के जीव है

कहीं प्रकार के अंग है

कहीं प्रकार के स्वभाव है

कहीं प्रकार के कर्माधिकार है

कहीं प्रकार की गति है

कहीं प्रकार की मति है

कहीं प्रकार की क्षति है

कहीं प्रकार की वृद्धि है

कहीं प्रकार की वृत्ति है

कहीं प्रकार की शक्ति है

कहीं प्रकार के राग है

कहीं प्रकार के भोग है

कहीं प्रकार के अन्न है

कहीं प्रकार के रंग है

कहीं प्रकार के रोग है

कहीं प्रकार की प्रकृति है

कहीं प्रकार की मान्यता है

कहीं प्रकार की सोच है

कहीं प्रकार के अर्थ है

कहीं प्रकार की मृत्यु है

कहीं प्रकार के प्रमाण है

कहीं प्रकार के सत्य है

कहीं प्रकार के ज्ञान है

कहीं प्रकार के भाव है

कहीं प्रकार के विकार है

कहीं प्रकार के आकार है

कहीं प्रकार के विकास है

कहीं प्रकार की सृष्टि है

कहीं प्रकार के संवर्धन है

कहीं प्रकार के अर्चन है

कहीं प्रकार के पार्जन है

कहीं प्रकार के श्वास है

कहीं प्रकार के उच्छ्वास है

कहीं प्रकार की द्रष्टि है

कहीं प्रकार की वृष्टि है

कहीं प्रकार की क्षमता है

कहीं प्रकार की ममता है

कहीं प्रकार के रहस्य है

हमारी साथ साथ जीते है जो जो जीव, उनकी जो भी योग्यता है - जो जो भिन्नता है - जो हमारे साथ साथ जीवन बिताते है उनका भी महत्व और माध्यम हमारे जीवन से अचूक है।

जिससे ही हम हमारी सार्थकता - साक्षरता - संस्कृति समझ सकते है।

" Vibrant Pushti "

दु:ख कहां से आता है?
दु:ख कैसे उठता है?

दु:ख क्यूँ है?

हम सबने सोचा

यह कैसे प्रश्न है?

यह तो सनातन है, सदा जन्म जीवन और संसार से जुडा है। इनमें कौनसी अचंभित भरी या कोई नयी या कोई विरल या कोई अलौकिक या कोई आश्चर्य भरी बात है।

यह तो है और है और है।

इसके लिए जीना जागना संवरना संभलना स्वीकारना समझना अपनाना आजमाना और हस्ते हस्ते या रहते रहते या जीते जीते जीवन जी लेना।

यह तो सभी को है - मैं अकेला तो नही ही हूँ यह अस्तित्व में।

ओहह!

किसीका भी जीवन टटोल लो!

किसीका भी चरित्र समझ लो!

किसका भी इतिहास देख लो!

न कोई अस्पृश्य है यह निधि से

न कोई अदृश्य है यह अनुभव से

न कोई सलामत है यह गति से

न कोई जीव

न कोई मानस

न कोई ब्रह्म

न कोई द्वैत

न कोई अंश

निर्देष्ट है यह अनुकंपा से

सोच लो!

गहराई से सोच लो!

ज्ञान से सोच लो!

भाव से सोच लो!

संस्कृति से सोच लो!

संस्कार से सोच लो!

आशीर्वाद से सोच लो!

धर्म संस्थापन से सोच लो!

सत्य सिद्धांत से सोच लो!

पर सच कहे!

कुछ तो है ही

जो दु:ख से पर है।

" Vibrant Pushti "

दुःख मानसिकता से है

दुःख शारीरिकता से है

दुःख धनीकता से है

दुःख मान्यता से है

दुःख अधार्मिकता से है

दुःख अज्ञानता से है

दुःख असमानता से है

दुःख असलामती से है

दुःख आध्यात्मिकता की असमझता से है

दुःख असत्यता के सिद्धांतों से है

दुःख असमंजस से है

दुःख अयोग्यता से है

दुःख अधुरप से है

दुःख अविद्या से है

दुःख अघटिता से है

दुःख नग्नता से है

दुःख अशिक्षित से है

दुःख विकृति से है

दुःख कुसंस्कार से है

दुःख जुठ्ठता से है

दुःख असैद्धांतिकता से है

दु:ख अफवाहें से है

दु:ख स्वार्थता से है

दु:ख कपटता से है

दु:ख छूपाने से है

यह दु:ख तो खुद ने ही रचाया है

सोच लेना

कभी प्रकृति से दु:ख आया है

कभी सृष्टि से दु:ख उठा है

कभी ब्रहमांड से दु:ख की गति होती है

कभी परमेश्वर से दु:ख पाया है

सोच लो!

हम दु:खी है - क्यूँकि हम दु:ख के उपासक - रचयिता - साकारत्व - परम श्रेष्ठ स्वार्थ सभर है।

नही तो दु:ख ....

" Vibrant Pushti "

"द्रष्टि" हम सब जानते है

जो निहालते है वह द्रष्टि

जो देखते है वह द्रष्टि

जो कुछ सुनते है और जो जो हमारी योग्यता से समझते है वह द्रष्टि

जो जो स्पर्शते है और जो जो हमारी समझ से अनुभव करते है वह द्रष्टि

पर ऐसा नही है

द्रष्टि तो हमारी पहचान है

द्रष्टि तो हमारी आंतरिकता है

द्रष्टि तो हमारी विद्वता है

द्रष्टि तो हमारी साक्षरता है

द्रष्टि तो हमारा ज्ञान है

द्रष्टि तो हमारी सभानता है

द्रष्टि तो हमारी श्रेष्ठता है

द्रष्टि तो हमारी योग्यता है

द्रष्टि को शिक्षात्मक करना

द्रष्टि को विशुद्ध करना

द्रष्टि को पवित्र करना

द्रष्टि को विशिष्ट करना

द्रष्टि को योग्य करना

हमारा प्राथमिक कर्तव्य है

जिससे ही हम जन्म जीवन श्रेष्ठ कर सकते है

सत्य सत्य सत्य जान सकते है - समझ सकते है - पहचान सकते है - अपना सकते है - पा सकते है।

" Vibrant Pushti "

मन दौडता रहता है
कभी भी स्थिर है?

मौन धरे मन स्थिर करने

भक्ति करे एक चित करने

ध्यान धरे मन नियंत्रण करने

तपस्या करे मन केन्द्रित करने

ज्ञान धरे मन योग्य करने

ऐसा क्या है यह मन जो इनके लिए सारा जन्मोजन्म - जीवन जीवन आहुत करे?

कितने तन धरे

कितने कर्म करे

कितनी शिक्षा धरे

कितनी परिक्रमा करे

कितने भाव भरे

कितने रंग धरे

कितने संग जुडे

कितने रस धरे

कितने पुरुषार्थ पुरे

कितने सिद्धांत सिंचे

कितनी सिद्धि पाये

कितने तत्व एकाकारे

कितने ब्रह्म विकासे

कितने तन त्यागे

कितने धन पार्जे

कितने धर्म धरे

कितनी संस्कृति तरासे

सच! क्या है यह अंश - अंशी का अस्तित्व जो एक एक हो कर अनेक अनेक कृत कृत कर आकार निराकार हो कर एकाकार है।

वाह! क्या परिवर्तन है!

वाह! क्या गति है!

वाह! क्या सिद्धांत है!

वाह! क्या पुष्टि है!

" Vibrant Pushti "

क्यूँ उबड खाबड रास्ते

क्यूँ आश्रित कुटुंब त्व

क्यूँ अवमानित रिश्ते

क्यूँ अर्धराही हमराहे

क्यूँ स्वार्थ से दोस्ते

क्यूँ आशंकित धर्मे

क्यूँ असमंजस विचारे

क्यूँ अनिश्चित कार्ये

क्यूँ अघटित कर्मे

क्यूँ भिन्न सहारे

क्यूँ अविश्वसनीय विश्वासे

क्यूँ अपवित्र पवित्रे

क्यूँ अशुद्ध शुद्धे

क्यूँ अपरिपक्व तत्वे

क्यूँ अज्ञान आत्मने

क्यूँ अभाव बंधने

क्यूँ काल परिवर्तनते

क्यूँ असलामती सलामते

और ऐसे कितने क्यूँ है हमारे सृष्टि वृष्टि प्रकृति स्वीकृति जन्म जीवन ब्रह्म में

हे परब्रह्म!   मेरी आपको प्रार्थना

" Vibrant Pushti "

बसंत - ऋतुओं की रानी
हमारी सौंदर्य की माधुरी
हमारे पुरुषार्थ की सुहानी
हमारी समृद्धि की जवानी
हमारी आंतरिकता की उर्जानी
हमारी सामर्थ्य की शृंगारी
हमारी संस्कृति की कहानी
हमारी गीतों की उडानी
हमारी संगीत की सूरानी
हमारी भक्ति की भवानी
हमारे प्रेम की दीवानी
हमारी संस्कार की परवानी
हमारे रंगों की पहचानी
हमारे आनंद की लूटानी
हमारे धर्म की अनुशाशनी
हमारी एकता की विद्यानी
हमारी प्रकृति की महारानी
को शत शत नमन!

" Vibrant Pushti "

कितनी इच्छा प्रकट करो!

कीतनी आश जताओ!

कितने संकल्प धरो!

कितने स्वपने रचो!

कितने ख्याल करो!

कितने तुक्के लगाओ!

कितनी मांग मांगो!

कितने ऐश्वर्य बढाओ!

कितने ज्ञान धरो!

कितने धन कमाओ!

कितने धर्म अपनाओ!

कितनी दरिद्रता पाओ!

कितने अधर्म आचरो!

कितनी भक्ति जगाओ!

कितने विकल्प ढूँढो!

कितने विचार विमर्शो!

कितने तर्क लडाओ!

कितने मार्ग चलो!

कितने सूचन सुनाओ!

कितने सिद्धांत प्रमाणों!

कितनी सिद्धि सांधो!

कितनी मेहनत करो!

कितनी रीति अजमाओ!

कितनी नीति समझो!

सोच लें!   जितना भी सोच - कर्म - सिद्धि हो!

पर

गति तो होनी ही है

पर

परिवर्तन तो होना ही है

पर

जाना तो ही है

पर

पहुँचना तो ही है

नरसिंह को देखलो

अश्वत्थामा को देखलो

कर्ण को देखलो

प्रहलाद को देखलो

राम को देखलो

कृष्ण को देखलो

पर

श्री कृष्ण हर हर से है

क्यूँ!

गहराई से अध्ययन करना

सूक्ष्मता से सिद्धांत धरना

विरहता से प्रीत करना

आनंद से भक्ति करना

तो शायद! पहुँचने के संकेत पाये

" Vibrant Pushti "

क्या है हम?
क्या कर सकते है हम?
धन दौलत ही कुछ कर सकता है?
रुप सौंदर्य ही कुछ कर सकता है?
बल ही कुछ कर सकता है?
नही नही!
हम से हम मिलाये तो कुछ भी कर सकते है
हम हमारा कदम बढाये सृष्टि के लिए तो श्रेष्ठ हो सकता है
हम हमारा सर्व के लिए तो सत्य रच सकते है
हम हमारा ज्ञान धरे
हम हमारा भाव धरे
हम हमारी वृत्ति धरे
हम हमारी कृत्ति धरे
हम हमारी शिष्टता धरे
हम हमारी मेहनत धरे
हम हमारा सौंदर्य धरे
हम हमारा इश्वर्य धरे
हम हमारा बल धरे
हम हमारा विश्वास धरे
हम हमारा इमान धरे
हम हम ना रहे है हमारा तो सर्वथा हो सकता है
" Vibrant Pushti "

आज 125 करोड भारतीय की आत्मा जल रही है उन शहीदों के लिए जो हमारी सुरक्षा के लिए खुदको कुरबान कर दिया।

आज हम खुदको जागना है उन राजकीय दलों के लिए जो हर कदम कदम पर हमें गुमराह करते रहते है, आज सच में हमें पहचानना होगा यही नेताओं को जो हर तरह से श्री नरेन्द्र मोदी जी को बदनाम करते है, आज हमें खुदको उठकर उन्हें हर तरह से धिक्कारना है जो अपना वतन तो क्या अपना देश तो क्या दुनिया का हर देश उन्हें धिक्कारे!

यही ही हमारी सच्ची श्रद्धाजंली है हमारे हर शहीदों की!

" Vibrant Pushti "

" जय हिन्दुस्थान "

"वंदेमातरम"

जीता हूँ क्या खुद की खातिर

अरे कभी कुटुंब के लिए जी ले

अरे कभी अपनी गली के लिए जी ले

अरे कभी अपने मोहल्ले के लिए जी ले

अरे कभी अपने वतन के लिए जी ले

अरे कभी अपने गांव के लिए जी ले

अरे कभी अपने शहर के लिए जी ले

अरे कभी अपने राज्य के लिए जी ले

अरे कभी अपने देश के लिए जी ले

ऐसे जीने से अपनी हर माँ को पूछले जो हर हर वक्त अपने बेटे के लिए जीती है

जो कुटुंब की माँ!

जो संस्कार की माँ!

जो धर्म की माँ!

जो संस्कृति की माँ!

जो नदी माँ!

जो कुल माँ!

जो धरती माँ!

जो देश की माँ!

हे माँ! तेरे लिए मैं कुरबान हूँ

सदा तेरी रक्षा के लिए खुद मिटुंगा!

तु है तो मैं हूँ

तुझसे ही मेरा जीना

करता हूँ यह प्रतिज्ञा यह पल

यही क्षण से जीऊँगा अखंड वीर हो कर

न चोरी करुंगा

न गुमराह करुंगा

न विश्वासधात करुंगा

न लूटफाट करुंगा

न इज्जत लुटुंगा

न बेईमानी करुंगा

सदा रक्षा करुंगा हर सिद्धांतो से

सदा रक्षा करुंगा हर नापाको से

सदा रक्षा करुंगा हर अराजकता से

सदा रक्षा करुंगा हर गद्दारों से

सदा रक्षा करुंगा अत्याचारों से

सदा रक्षा करुंगा भ्रष्टाचारों से

सदा रक्षा करुंगा देशद्रोही से

सदा रक्षा करुंगा आतंको से

" Vibrant Pushti "

कौन है भगवान?

जो जो मान्यता में रहते है वह मान्य मान्य में ही मर जायेंगे

क्यूँकि मान्यता विश्वास भरी नही है

जो मान्यता में खुद की बुलंदियों से आत्म विश्वास भरा हो तो भगवान हम खुद है और हम जो भी करे अचूक सिद्धांत से ही होता है - अभयता से होता है - सुरक्षा से होता है।

इसलिए तो कहते है

"खुद को कर बुलंद इतने की खुदा अपने बंदे से पूछे तेरी रझा क्या है?

हे खुदा के बंदे साथ हूँ तेरे जो करेगा वो जीत जायेगा! " "जो करेगा वो भगवान हो जायेगा।"

हे भारतीय! जगा अपनी बुलंदियों को -

कैसा तु न्यायाधीश है!

कैसा तु मंत्री है!

कैसा तु वकील है!

कैसा तु नेता है!

कैसा तु NSA है!

कैसा तु NSG है!

कैसा तु CBI है!

कैसा तु निर्देशक है!

कैसा तु पुलिस है!

कैसा तु सुरक्षादल है!

कैसा तु सैनिक है!

कैसा तु अधिकारी है!

अरे! कैसा तु देशवासी है!

न डर नपुंसक विचार धाराओं से

न डर कोई महाभियोग से

न डर खुद के मिटने से

जो डर गया सो मर गया

क्या हम ....

उठ उठ और उठ!

"हिम्मते मुदा तो साथ ही है खुदा"

खुद ही खुद का खुदा जो खुद के सिद्धांत पर रहे

खुद ही भगवान हो

खुद ही भगवान है

यही ही हमारी सच्चाई है।

" Vibrant Pushti "

શરમ આવે છે આવા વ્યક્તિઓ થી

"मनुष्य"

क्या हो सकता है?

क्या कर सकता है?

क्या पा सकता है?

पूरा जगत छू लो

पूरा ब्रह्मांड पहचान लो

पूरा ज्ञान समझ लो

पूरा विज्ञान प्रमेय लो

पूरा सत्य टटोल लो

सच में हम क्या है? क्या कहे!

क्या करते रहते है?

कैसे जीते रहते है

कैसे सोचते रहते है?

कैसे पाते रहते है?

कैसे झझुमते रहते है?

कैसे छूते रहते है?

कैसे पहचानते रहते है?

कैसे समझते रहते है?

कैसे प्रमेयते रहते है?

कैसे टटोलते रहते है?

कैसे भटकते रहते है?

ओहह! क्या यह जन्म है!

ओहह! क्या यह तन है!

ओहह! क्या यह मन है!

ओहह! क्या यह जीवन है!

जिस जिसने जो भी छूया वो ही छूते छूते हम क्या नही छू सकते!

जिस जिसने जो भी पहचाना वो ही पहचानते पहचानते हम क्या नही पहचान सकते!

जिस जिसने जो भी समझा वो ही समझते समझते हम क्या नही समझ सकते!

जिस जिसने जो भी प्रमेया वो प्रमेयते प्रमेयते हम क्या नही प्रमेय सकते!

जिस जिसने जो भी टटोला वो ही टटोलते टटोलते क्या नही टटोल सकते!

हमारे वेद वेदांत ने सर्वत्र छू लिया है

हमारे वेद वेदांत ने सर्वत्र पहचान लिया है

हमारे वेद वेदांत ने सर्वत्र समझ लिया है

हमारे वेद वेदांत ने सर्वत्र प्रमेय लिया है

हमारे वेद वेदांत ने सर्वत्र टटोल लिया है

हमारे वेद वेदांत ने सर्वत्र पा लिया है

पर हमने सर्वत्र खो दिया है

पर हमने सर्वत्र गँवा दिया है

पर हमने सर्वत्र ठुकरा दिया है

पर हमने सर्वत्र भूला दिया है

पर हमने सर्वत्र ध्वंस दिया है

पर हमने सर्वत्र छोड दिया है

क्यूँकि मान्यता ही हम है

क्यूँकि अनुकरण ही हम है

क्यूँकि आधारित ही हम है

क्यूँकि निस्कृत ही हम है

क्यूँकि विद्रोही ही हम है

क्यूँकि अंधश्रद्धेय ही हम है

क्यूँकि असमंजस ही हम है

क्यूँकि असमानता ही हम है

क्यूँकि अर्धसत्य ही हम है

क्यूँकि अर्थ विहीन ही हम है

क्यूँकि स्वार्थ ही हम है

क्यूँकि अज्ञानी ही हम है

क्यूँकि अभिमान ही हम है

क्यूँकि आश्रित ही हम है

क्यूँकि आडंबर ही हम है

क्यूँकि अहंकार ही हम है

क्यूँकि आलोचक ही हम है

सोच लो! जितनी गहराई से सोचना हो

सच! खो दिया है खुदको ऐसे चक्र में जो न निकल सकते है - न संभल सकते है - न संवर सकते है।

" Vibrant Pushti "

" नकारात्मक "

यह शब्द का अर्थ हम ऐसे करते है

जो नकारात्मक सोचते है - करते है वह नकारात्मक है।

गहराई से सोचना

" नकारात्मक " अर्थात क्या?

मेरे ख्याल से " नकारात्मक "

ऐसा कोई शब्द ही नही है।

नकारात्मक तत्व हो सकता है पर नकारात्मक सोच और क्रिया तो नही ही हो सकती है।

शायद कोई तत्वज्ञानी हो - कोई शिक्षक हो - कोई प्राध्यापक को - कोई अध्यापक हो - कोई उपाध्यक्ष हो - कोई भाषाविद हो - कोई व्याकरणार्थी हो - वह भी गहराई से सोच - अध्ययन - चिंतन और क्रियात्मक करके कह सकता है - हाँ! " नकारात्मक " ऐसा कोई शब्द ही नही है।

और

हम कहीं बार यह शब्द का उपयोग घडी घडी करते है।

सोच लो! हम ऐसे है? क्या हम ऐसा सोच सकते है? क्या हम ऐसा कर सकते है?

अवश्य उत्तर - " ना " ही आयेगा।

" Vibrant Pushti "

हमारे ऋषि मुनियों
हमारे वेद वेदांत
हमारे संस्कार
हमारे धर्म
हमारे कर्म
हमारे वर्ग
हमारे गर्व
हमारे मर्म
हमारे काल
हमारे तत्व
हमारे मार्ग
हमारे मन
हमारे तन
हमारे धन
हमारे जीवन
हमारे पंचमहाभूत
हमारे ज्ञान
हमारे भाव
हमारे विचार
हमारे आचार
हमारे संयम
हमारे नियमन
हमारे आयाम
हमारे विज्ञान
हमारे सौंदर्य
हमारे अभियान
हमारे सन्मान
हमारे चरित्र
हमारे मंत्र
हमारे तंत्र

हमारे यंत्र

हमारे शास्त्र

हमारे विश्वास

हमारे संगठन

हमारे गाँव

हमारे रिश्ते

हमारे रंग

हमारे निर्णय

हमारे नित्य

हमारे गीत

हमारे संविधान

हमारे गीत

हमारे धैर्य

हमारे शौर्य

हमारे वीर्य

हमारे गृह

हमारे आचरण

हमारे पोषण

हमारे परिवार

हमारे सत्संग

हमारे संबंध

हमारे बंधन

हमारे वर्तन

हमारे वचन

हमारे जतन

हमारे उत्सव

हमारे उमंग

हमारे शृंगार

हमारे धान्य

हमारे मानस

हमारे साहस

हमारे योग

हमारे आनंद

हमारे सामर्थ्य

हम इतिहास समझते है - 200 वर्ष का

हम चरित्रों समझते है - 5000 वर्ष का

हम शास्त्र समझते है - 10000 वर्ष का

हम विज्ञान समझते है - 50 वर्ष का

हम धर्म समझते है - 500 वर्ष का

हम अपने आप को क्या रचेंगे

हम अपने आप को क्या समझेंगे

हम अपने आप को क्या घडेंगे

हम अपने आप को क्या बनायेंगे

हम अपने आप को क्या सिखायेंगे

अरे! हम सिर्फ 5000 वर्ष का इतिहास

अरे! हम सिर्फ 5000 वर्ष का चरित्र

अरे! हम सिर्फ 5000 वर्ष का शास्त्र

अरे! हम सिर्फ 5000 वर्ष का विज्ञान

अरे! हम सिर्फ 5000 वर्ष का धर्म

समझले तो अचूक हम हमारी सही पहचान पा सकते है।

अपना लो!

" Vibrant Pushti "

जब बहुत अंधेरा होता है

तब ही कोई दीपक टीम टीमाता है

जब बहुत नापाक होता है

तब ही कोई पाक ज्योत जलाता है

जब बहुत आंतक होता है

तब ही कोई मर्दानगी चढाई करता है

जब बहुत जूठ फैलता है

तब ही कोई सत्य मिशाल उठाता है

जब बहुत दमन होता है

तब ही कोई दुश्मन दामन चीरता है

जब बहुत धैर्य रखता है

तब ही कोई सलामती रास्ता पाता है

जब बहुत अत्याचार होता है

तब ही कोई हिम्मत हथियार मारता है

सच! हम हिन्दुस्थानी ने हर एक से बहुत धार्मिक भाईचारा बांधा

खुद को लूटाकर गैरों को सन्मानीत किया

खुद को भूखे रख कर औरों को रोटी दिया

अपने को तरछोड कर गैरों को अपनाया

अपने को भूलकर औरों को याद किया

क्यूँ?

धर्म सहिष्णुता

साथ सहिष्णुता

प्रेम सहिष्णुता

आचार सहिष्णुता

देश सहिष्णुता

कर्म सहिष्णुता

संस्कृति सहिष्णुता

यही ही है हिन्दुस्थानी

जिसकी मिट्टी है साथ की

जिसका जल है शुद्धता का

जिसका वायु है ऐकता का

जिसका आकाश है आनंद का

जिसका तेज है पवित्रता का

जो भी विश्वास तोडे वह सदा तुटे

जिसने मिट्टी से खिलवाड किया - मार दिया

जिसने जल से खिलवाड किया - डूबा दिया

जिसने वायु से खिलवाड किया - उडा दिया

जिसने आकाश से खिलवाड किया - तोड दिया

जिसने तेज से खिलवाड किया - जला दिया

सोच लो! हे गद्दारों!

अब न यहां कोई अमीचंद है

अब न यहां कोई बाबर है

अब न यहां कोई जाती बदल गांधी है

अब तो

मेरा हिन्दुस्थान - मैं ही हिन्दुस्थानी

घर घर एक ही गूँज -

हमारा हिन्दुस्थान - हिन्दु हिन्दु की आन बान और शान

जय हिंद

" Vibrant Pushti "

हम मनुष्य
हर कोई एक समान
हर कोई एक जीवन
हर कोई एक सृष्टि
हर कोई एक प्रकृति
हर कोई एक पंचतत्वों
हर कोई एक धर्म सनातन
हर कोई एक कर्म निधान
हर कोई एक संस्कार
हर कोई एक परंपरा
तो भी हर घडी
कौन सही? कौन गलत?
क्या सही? क्या गलत?
क्यूँ ऐसे भँवर में आये?
क्यूँ ऐसे विचार में आये?
क्यूँ ऐसे ख्याल में रहे?
क्यूँ ऐसे कार्य करे?
क्यूँ ऐसे समझ में पाये?
क्यूँ ऐसा समय रचाये?
क्यूँ ऐसा नसीब में माने?
क्यूँ ऐसा विश्वास में जीये?
क्यूँ ऐसी शक्ति में रांचे?
क्यूँ ऐसी असमंजस में भटके?
क्यूँ ऐसी अवस्था में डूबे?
क्यूँ ऐसी अटकलें लगायें?
क्यूँ ऐसी वृत्ति में संस्कृते
क्यूँ ऐसी शिक्षा में माने?
क्यूँ ऐसे धर्म पहचाने?
क्यूँ ऐसी रीत अपनाये?
क्यूँ ऐसे उंच नीच जगाये?

सच!

सोचे!

हे मनुष्य!

क्यूँ निखालसता से न रहे?

क्यूँ पारदर्शक्ता से न जुडे?

क्यूँ निडरता से न कहे?

क्यूँ संस्कारिता से न घडे?

क्यूँ वास्तविकता से न संवरे?

क्यूँ द्रढ विश्वास से न अपनाये?

क्यूँ योग्यता से न विकसे?

क्यूँ धर्म संहिता से न धरे?

क्यूँ सत्यता से न विचरे?

हे प्रभु!

क्यूँ ऐसा ऐहसास?

चलो उठो! करे योग्य जो योग्य है।

" Vibrant Pushti "

हाँ!   मनुष्य
जीने के लिए कितना मार्ग

जीने के लिए कितना व्यवहार

जीने के लिए कितना आधार

जीने के लिए कितना आचार

जीने के लिए कितना विचार

जीने के लिए कितना सूचन

जीने के लिए कितना सिद्धांत

जीने के लिए कितना आयोजन

जीने के लिए कितना आडंबर

जीने के लिए कितना उमंग

जीने के लिए कितना रंग

जीने के लिए कितना संग

जीने के लिए कितना पुरुषार्थ

जीने के लिए कितना संबंध

जीने के लिए कितना बंधन

जीने के लिए कितना आचरण

जीने के लिए कितना माध्यम

जीने के लिए कितना अधिकार

जीने के लिए कितना स्वीकार

जीने के लिए कितना आकार

जीने के लिए कितना विकार

जीने के लिए कितना विश्वास

जीने के लिए कितना ध्यान

जीने के लिए कितना धर्म

जीने के लिए कितना मर्म

जीने के लिए कितना विवेचन

जीने के लिए कितना विवरण

जीने के लिए कितना गुण

जीने के लिए कितना डर

जीने के लिए कितना वैभव

जीने के लिए कितना सत्य

जीने के लिए की कितना सहारा

जीने के लिए कितना नसीब

जीने के लिए कितना भाग्य

जीने के लिए कितना राग

जीने के लिए कितना पैसा

जीने के लिए कितना संस्कार

जीने के लिए कितना शृंगार

जीने के लिए कितना प्रेम

जीने के लिए कितना .... कितना

हम क्या ले कर आये है?

उन पर कभी गौर किया है?

जो ले कर आये है उन्हें ही पहचान ले

तो न कोई कितना की जरुरत नही है

और हम जो है उनसे ही भगवान हो जायेंगे।

अपनालो!

" Vibrant Pushti "

"शिवरात्रि"

पारधी और हिरण की वार्ता हमें याद है

यह पारधी कौन?

यह हिरण कौन?

सच! हम पारधी के इंतजार में तोडते पत्ते को हम पहचानते है और उनमें वह श्री शिवजी को प्रसन्न करता है।

और

जो अपना वचन निभाते हुए खुदको समर्पण करते हिरण को पहचानते है, जिससे उनका भी पारधी के साथ जीव उद्धार होता है।

सोच ले! ऐसा व्यवहारिक हो सकता है?

सोच लो!

हम भी कहीं वर्षो से श्री शिवजी को दूध और बिली पत्र चढाते है और एक विश्वास के साथ हम भी अर्चन पूजन करते है मान्यता से जो पाया वह मान्य।

पर गहराई से चिंतन करे तो

कौन था पारधी?

कौन था हिरण?

कौन थे श्री शिवजी?

पारधी हम है - क्यूँकि हम अपना जीवन यापन करने में हमें पुरुषार्थ करना होता है - भरण पोषण करना होता है। इसलिए हम पुरुषार्थ और शिकार करते रहते है।

अर्थात हम जीव की हिंसा करते है अपने स्वार्थ के लिए - सोच लो!

आज भी हम हर व्यवहार पर जीव हिंसा नही करते है?

जूठ बोल कर

कपट कार्य कर

लूट कर

भेदभाव कर

अन्याय कर

विश्वासधात कर

अपकृत्य कर

यह जीव हिंसा ही है।

हिरण सात्विक है

जो सृष्टि का पशु जीव होते प्रश्चयात सदा सिद्धांत आधारित जीवन जीना और यही ही शरीर पा कर आत्मीय अंश को सार्थक करना - जिसमें न जूठ है

- जिसमें न कपट है
- जिसमें न भेदभाव है
- जिसमें न अन्याय है
- जिसमें न विश्वासधात है
- जिसमें न अपकृत्य है

यह जीव सात्विक हो कर दूसरे में भी सात्विकता जगाता है - जैसे पारधी में जगाया, और यही पारधी जागते जागते खुदके समस्त दूरीत का क्षय कर के खुद को सात्विक कर दिया।

क्या हम और हमारे कुटुंब और हमारे समाज को सात्विक कर सकते है?

" Vibrant Pushti "

मैं विश्वास ही रखता हूँ।
मैं निखालस से ही कहता हूँ।
मैं निडरता से ही रहता हूँ।
मैं समझता से ही करता हूँ।
मैं योग्यता से ही जुडता हूँ।
मैं सत्यता से ही आचरता हूँ।
मैं नम्रता से ही व्यवहारता हूँ।
मैं शिष्टता से ही जीता हूँ।
मैं संयमता से ही चलता हूँ।
मैं उद्यमता से ही पार्जनता हूँ।
मैं श्रेष्ठता से ही विकासता हूँ।
मैं गुणवत्ता से ही अपनाता हूँ।
मैं निष्ठा से ही आदरता हूँ।
मैं प्रेम से ही जीता हूँ।
मैं दृडता से ही संकल्पता हूँ।
मैं सैद्धांतिक से ही झझुमता हूँ।
मैं संस्कार से ही धर्मता हूँ।
मैं ज्ञान से ही स्वीकारता हूँ।
मैं भाव से ही मिलता हूँ।
मैं समय से ही साधता हूँ।
मैं निस्वार्थता से ही गुजरता हूँ।
मैं नि:संदेहता से ही पाता हूँ।
मैं निरोगता से ही स्वस्थता हूँ।
मैं मन से ही स्थिरता हूँ।
मैं तन से ही सेवकता हूँ।
मैं धन से ही प्रयोजनता हूँ।
मैं जीवन से ही संवरता हूँ।
मैं पुरुषार्थ से ही संस्कारता हूँ।
मैं कुटुंब से ही वसुवैधता हूँ।
मैं समाज से ही जागता हूँ।

मैं संस्कृति से ही विद्यता हूँ।
मैं अनुभूति से ही साक्षरता हूँ।
मैं इश्वर से ही पहचानता हूँ।
मैं अंशी से ही अंशता हूँ।
मैं परब्रह्म से ही ब्रह्मता हूँ।
यही ही है जन्म जीवन की पराकाष्ठाएं
बस जीते ही जाना है - जीते ही जाना है।
जब तक हमारी साँस सूरज हो जाय।
" Vibrant Pushti "

कितना शोर है

कितना अवरोध है

कितना आक्रोश है

कितना विरोध है

कितना घमासान है

कितना फरेब है

कितना छल है

कितना मारन है

कितना कायर है

कितना अधुरप है

कितना मुश्किल है

कितना भरमार है

कितना जूठ है

कितना झगडा है

कितना धूर्त है

कितना मूर्ख है

कितना क्रूर है

कितना गबन है

कितना विवेचन है

कितना विवाद है

कितना निच है

कितना घिनौना है

कितना अघटित है

कितना मजबूर है

कितना स्वार्थी है

कितना आडंबर है

कितना दुष्ट है

कितना अज्ञान है

कितना त्रास है

कितना नापाक है

कितना दुर्गंध है

कितना दुःख है

कितना दुशासन है

कितना दर्द है

कितना वंचित है

कितना चर्चित है

कितना गैर है

कितना वैर है

कितना अर्थघटन है

कितना संशय है

कितना विकार है

कितना विकराळ है

कितना झिझकना है

कितना झझुमना है

कितना भय है

कितना अन्याय है

कितना बेशुद्ध है

कितना शक है

कितना विनाशक है

कितना भयानक है

कितना निष्ठुर है

कितना बेचैन है

कितना गुमराह है

कितना गिरावट है

कितना मिलावट है

कितना अंधाधुंध है

कितना बूरा है

कितना हनन है

कितना अधर्म है

कितना बगावत है

कितना पामर है

कितना जोखिम है

कितना अंजान है

कितना जुर्म है

कितना भ्रष्टाचार है

कितना भ्रम है

ओहहह .... कितना और कितना!

हम कैसे देशवासी है?

ओहह! सिर्फ एक व्यक्ति - श्री नरेन्द्र मोदीजी

हे प्रभु! मुझे भी जुडना है उनसे

" Vibrant Pushti "

"स्त्री"

श्री प्रभु की यह रचना अति गहराई भरी केवल से प्रीत से ही है। जो यह ब्रहमांड के रचइताने अपनी आत्मीयता से उन्हें कंडारा है। कोई भी स्त्री कुरुप नही है, हर स्त्री सौंदर्य स्वरुप ही है।

क्या अपनी माता स्वरुप वान नही है?

क्या अपनी बहन स्वरुप वान नही है?

क्या अपनी पत्नी स्वरुप वान नही है?

क्या अपनी बिटिया स्वरुप वान नही है?

है है और है।

ब्रहमांड के कोई भी स्त्री तत्व छू लो।

अदभुत अलौकिक और आकर्षक ही होगा।

क्यूँ?

आप कोई भी तत्व हो पुरुष तत्व हो या स्त्री तत्व हो - खुद ही सोच लो।

हर तरह से

हर संस्कृति से

हर भाव से

हर ज्ञान से

जिन्होंने यह स्त्री तत्व को निम्नता से छूआ है या छूआ होगा उनका खुद का तत्व निम्नता से इतना गिरता है, वह राक्षस योनि से भी निम्न हो जाता है। इसलिए रोगी ही रोगी ही रोगी हो गया होता है।

उनकी भूमि

उनका आकाश

उनका जल

उनका वायु

उनका तेज

समतोल और सलामत नही रहता है।

तो

जन्म जीवन और जगत भी अस्थिर हो जाता है।

न उनका कोई वर्तमान होता है

न उनका कोई भूतकाल होता है

न उनका कोई भविष्य होता है

न कोई संगीत है - न कोई चरित्र है - न कोई पौरुषत्व है - न कोई रस है

हे प्रभु!

" Vibrant Pushti "

नारी - सन्नारी - सुनारी - समनारी - सुज्ञनारी - शौर्यनारी

सृष्टि है

प्रकृति है

पृथ्वी है

धरती है

नदी है

संस्कृति है

गीता है

भागवत है

भक्ति है

माता है

विधाता है

गोपि है

है अलौकिक! है वात्सल्ययी! है श्रेष्ठी

है त्यागी! है सत्यायी! है सन्यासी!

है प्रिये! है वैदेही! है वीर्ययी!

है प्रज्ञानी! है सौंदर्ययी! है विभूति!

है वीर! है धीर! है नीर!

है उपासना! है विकासना! है वंदना!

है सर्वज्ञी! है विद्यायी! है सिद्धेयी!

है साम्राज्ञी! है विशुद्धायी! है सुश्रायी!

है द्रष्टायी! है दिशायी! है दीर्घययी!

सच है तु है तो है

है सर्वत्र है तो है

है ब्रह्म है तो है

है प्रीत है तो है

है काल है तो है

है धर्म है तो है

है सेवा है तो है

नमन

प्रणाम

वंदन

दंडवत स्वीकार है वात्सल्ययी!

" Vibrant Pushti "

व्यक्ति व्यक्ति रोगी

व्यक्ति व्यक्ति भोगी

व्यक्ति व्यक्ति ढोंगी

व्यक्ति व्यक्ति क्षोभी

व्यक्ति व्यक्ति बागी

व्यक्ति व्यक्ति दागी

व्यक्ति व्यक्ति मागी

व्यक्ति व्यक्ति रागी

व्यक्ति व्यक्ति त्रागी

व्यक्ति व्यक्ति भागी

व्यक्ति व्यक्ति मूंगी

व्यक्ति व्यक्ति तरंगी

व्यक्ति व्यक्ति रंगी

व्यक्ति व्यक्ति दंभी

व्यक्ति व्यक्ति ठगी

व्यक्ति व्यक्ति डगी

व्यक्ति व्यक्ति कढंगी

क्यूँ ऐसा?

सोचना! धैर्य से सोचना

सोचना! गहराई से सोचना

सोचना! ज्ञान से सोचना

सोचना! भाव से सोचना

सोचना! धर्म से सोचना

सोचना! कर्म से सोचना

सोचना! अध्ययन से सोचना

सोचना! शास्त्र से सोचना

सोचना! सिद्धांत से सोचना

सोचना! आशीर्वाद से सोचना

सोचना! कृपा से सोचना

सोचना! अहंकार से सोचना

सोचना! संस्कृति से सोचना

सोचना! सिद्धि से सोचना

सोचना! गुरु हो कर सोचना

सोचना! महात्मा हो कर सोचना

सोचना! विद्यापति हो कर सोचना

सोचना! वैज्ञानिक हो कर सोचना

पर अवश्य सोचना

अगर सोचते सोचते हमें

भगवान बुद्ध आ जाये

सोक्रेटीस याद आ जाये

इसु ख्रिस्त याद आ जाये

महंमद पैगंबर याद आ जाये

शंकराचार्य याद आ जाये

या

अपने धरणे हुए गुरु याद आ जाये

तो तो अति गहराई से सोचना

या

श्री कृष्ण याद आ जाये

शायद सत्य जान पाये!

" Vibrant Pushti "

दूर से ही नजदीक का पता चलता है

ऐसे

नजदीक से ही दूर का पता चलता है

हम कहीं रहे

हम कहीं भटके

हम कहीं चले

हम कहीं रुके

पर पता तो ऐसे ही चलता रहता है

यही चलते चलते हमें सही और गलत

यही चलते चलते हमें अच्छा और बुरा

यही चलते चलते हमें सत्य और जूठ

यही चलते चलते हमें साथ और अलग

यही चलते चलते हमें आंतर और बाह्य

यही चलते चलते हमें अपना और पराया

यही चलते चलते हमें जन्म और मृत्यु

जान पाते है

समझ पाते है

पहचान पाते है

हमें जीना आ जाता है।

" Vibrant Pushti "

ये सिंदूर

ये टीका

ये बिंदिया

ये झुमके

ये नथनी

ये मंगलसूत्र

ये बाजूबंद

ये चूडियाँ

ये कंगन

ये अंगूठी

ये कंडोर

ये करधनी

ये छड

ये झांझर

ये कडा

ये पायल

ये घुँघरू

ये बिछिया

ये मेहदी

ये आँचल

यह क्या है? क्यूँ है?

आभूषण है

पर

क्या अर्थ है यह पहनने का?

क्या सिद्धांत है यह पहनने का?

क्या सत्यता है यह पहनने का?

क्या सिद्धता है यह पहनने की?

क्या श्रेष्ठता है यह पहनने की?

क्या अखंडता है यह पहनने की?

क्या धर्मता है यह पहनने की?

क्या स्पर्शता है यह पहनने की?

स्त्री ही यह पहनती है

क्यूँ

" Vibrant Pushti "

ये सिंदूर

ये टीका

ये बिंदिया

ये झुमके

ये नथनी

ये मंगलसूत्र

ये बाजूबंद

ये चूडियाँ

ये कंगन

ये अंगूठी

ये कंडोर

ये करधनी

ये छड

ये झांझर

ये कडा

ये पायल

ये घुँघरू

ये बिछिया

ये मेहदी

ये आँचल

यह क्या है? क्यूँ है?

आभूषण है

पर

क्या अर्थ है यह पहनने का?

क्या सिद्धांत है यह पहनने का?

क्या सत्यता है यह पहनने का?

क्या सिद्धता है यह पहनने की?

क्या श्रेष्ठता है यह पहनने की?

क्या अखंडता है यह पहनने की?

क्या धर्मता है यह पहनने की?

क्या स्पर्शता है यह पहनने की?

स्त्री ही यह पहनती है

क्यूँ? "

प्रणाम!

मुझे पता ही है

न कोई आंतर स्पर्श

न कोई जिज्ञासा उत्तर पायेंगे

नही नही!

सोचना - समझना अति आवश्यक है।

हाँ! हम मनुष्य है और यह हर संज्ञा को पहचानना संस्कार है - धर्म है - हमारी योग्यता है।

" Vibrant Pushti "

"ये सिंदूर"
हम हिन्दु संस्कार के संतान है
जो रचा है
माता सती पार्वती से
माता सती सीता से
माता वात्सल्य मयी यशोदा से
माता सती अनसूया से
सती सावित्री
जो सिंचा है
राणी लक्ष्मी
राणी रुक्मिणी
राणी तारा
राणी लक्ष्मी बाई
राणी पद्मावती
जिन्होंने अपने तन और मन पर कहीं ऐसे संस्कार धारण किये जो जैसी भी परिस्थिति आयी तब यही ही संज्ञा से उनका सतीत्व प्रकट हुआ - यही ही संज्ञा से उनका राणीत्व जाग उठा और उन्होंने आये हुए नापाक कुदृष्टि का नाश किया।
कितनी असाधारणता है।
यह सिंदूर की विशिष्टता श्रेष्ठता और सार्थकता ऐसे ही सांस्कृतिक धरोहरों से हमसे जुडी है, आज हम फैशन की लिप्तता में खुद को लुप्त कर के खुद की विशिष्टता श्रेष्ठता और सार्थकता नष्ट कर रहे है।
हे सती!
हे माता!
हे राणी!
" Vibrant Pushti "

'ये सिंदूर '

हाँ! हमारा यह संस्कार हमें पवित्र और विशुद्ध करता है।

ये सिंदूर हम उन्हीं कुंवारीका की मांग में भरते है जो मांग हमारी जीवन संगिनी की है - वह हमारे जीवन साथी की है - वह हमारे जीवन के राही की है - वह हमारी सरस्वती है - वह हमारी लक्ष्मी है - वह हमारी धरोहर है।

वही मांग हमारे यह जन्म जीवन का पथ है - मार्ग है - राह है जिस पर हम दोनों सदा साथ निभाते विश्वास के हर कदम उठाते उठाते श्री प्रभु सेवा में जुडते जाये - एकात्म होते जाये।

यही ही योग्यता है यह सिंदूर के सिद्धांत की - संस्कार की।

जो भरते भरते - स्पर्शते स्पर्शते हमारा भाग्य सिंचता जाय।

" Vibrant Pushti "

'रसिया '

रसिया खेलते है

रसिया सुनते है

रसिया गाते है

रसिया झुमते है

रसिया रंगते है

रसिया रंगाते है

रसिया रंग में गुल जाते है

रसिया रंग में खो जाते है

रसिया रंग में डूब जाते है

रसिया रंग में एकात्म जाते है

रसिया रंग में बरस जाते है

रसिया रंग में तरस जाते है

हाँ! अवश्य रंग कुछ है?

हाँ! अवश्य रंग कुछ करते है?

हाँ! अवश्य रंग कुछ सजते है?

हाँ! अवश्य रंग कुछ संकेतते है?

हाँ! अवश्य रंग कुछ कहते है?

हाँ! अवश्य रंग कुछ बोलते है?

हाँ! अवश्य रंग कुछ परिवर्तते है?

हाँ! अवश्य रंग कुछ सुनाते है?

हाँ! अवश्य रंग कुछ पुकारते है?

कहो आप ही कहो

रसिया क्या क्या हमें जताता है?

" Vibrant Pushti "

वैसे तो मुझे पता था

ये ऐसा होगा

क्यूँकि मैं यही संसार में जी रहा हूँ

कहीं समय से समझ रहा हूँ

ये ऐसा होगा

देखते देखते

सुनते सुनते

सोचते सोचते

ये ऐसा होगा

कितनी बार बातें करी

हर बार समझ असमंजस

कितनी बार उन्हें सुना

हर बार कोई अलग तरीका

तब विश्वास होने लगा

ये ऐसा होगा

जा जा कर बार बार समझाया

पलट पलट कर समझ जा कहा

माना न माना न कुछ जाना

तब पहचान पाया

ये ऐसा होगा

कहीं अर्थ करके तराशा

न ज्ञानार्थ अर्थाया

न भावार्थ अनुभवा

तब विश्वास पाया

ये ऐसा होगा

कहींओ से पूछा

कहींओ से मिला

न खुद को पूछा

न खुदने खुद को मिलाया

" Vibrant Pushti "

प्रश्न - हमारी गृह सेवा में हम ज्यादातर शृंगार रस और भोग रस में क्यूँ लालायित है?

यह प्रश्न हमारी वैष्णवता के योग्यता से जुडा था। कहीं ने उत्तर दिये कहीं ने मौन धरा और शायद कहीं ने टाल दिया होगा।

यह प्रश्न इसलिए किया था कि श्री जगद्गुरु वल्लभाचार्यजी सर्वर्था से हमारे आचार्य अर्थात गुरु है जिन्होंने सिद्धांतोंनुसार श्रेष्ठता से वैष्णवता की स्पर्शता, विशुद्धता, पवित्रता और योग्यता के लिए पुष्टिमार्ग का संस्थापन किया। यही ज्ञान यही शृंगार रस और भोग रस से अनुभूति प्रमाणित कि है ।

यह अनुभूति प्रमाणित ब्रहम सूत्र आधारित है, वेद आधारित है।

आजकल हम जो भी कुछ श्री कृष्ण की लीला सुन रहे है क...

हम समझते समझते बडे होते जाते है

अर्थात कुछ पाते है - कुछ खोते है

पर

हम हमारी संस्कृति नही पाते है

हम हमारे संस्कार नही पाते है

हम हमारा माता पिता खोते है

हम हमारा बचपन खोते है

आज जो उम्र पर है

सोचो हमने क्या पाया है - क्या खोया है?

हमारी संस्कृति जो शास्त्रों से घडी है

हमारी आध्यात्मिकता जो ऋषियों से घडी है

क्या कभी एक सूत्र या एक मंत्र पाया?

वेद वेदांत और उपनिषद के हर सूत्र में ऐसा सत्य है जो हमें न कोई संकट देता है - दु:ख देता है - कष्ट देता है।

तो भी नही ही पाना।

संस्कार शिष्टता और सन्मानता किसको देना?

सेवा विश्वास और प्रेम किसको देना?

खो दिया - पूरा खो दिया

है कहीं - है किसीमें

नही नही।

कैसा जन्म - कैसा जीवन - कैसा संबंध

अगर जीना ही है

आज से श्री मद् भगवद गीता समझना

आज से श्री प्रभु का पंच स्मरण

आज से श्री माता पिता का सन्मान

आज से श्री प्र...

सत्य का कहीं सिद्धांत हम गृहस्थ जीवन में ही सिद्ध कर सकते है और श्री प्रभु के निकट पहुँच सकते है।

यह सत्य के सिद्धांत कोई सन्यासी हो कर भी नही सिद्ध कर सकता या पा सकता है तो श्री प्रभु के निकट की बात तो बहुत दूर है।

हाँ! यह गृहस्थ जीवन बहोत ही निराला और अनोखा है।

गृहस्थ जीवन जगत का

गृहस्थ सृष्टि जगत का

गृहस्थ प्रकृति जगत का

एक ऐसा साधन है जो केवल और केवल श्री परम परमात्मा में एकात्मता ही हो।

हम भावात्मक और ज्ञानात्मक से जीवन निहाले तो कहीं ऋषियों के जीवन केवल गृहस्थ से ही सिद्धि प्राप्त है।

हम वास्तविकता से निहाले तो अष्टसखा का गृहस्थ जीवन ने ही उन्हें सर्व श्रेष्ठता प्रदान की।

सही में हमें गृहस्थ जीवन में जीना नही आया है।

सही में हमें गृहस्थ जीवन में सत्य पहचानना नही आया है

सही में हमें गृहस्थ जीवन की गुणवत्ता के गुणों हमने पाया नही है

सही में हमें...

हाँ! कभी आयना देखता खुद को देखने के लिए

हाँ! कभी अपनो का चहरा निहालता हूँ खुद को समझने के लिए

हाँ! कभी मुह से बोलते हुए शब्दों को सुनता हूँ खुद को समझने के लिए

हाँ! कभी लिखें हुए अक्षरों को पढता हूँ खुद को समझने के लिए

हाँ! कभी चले गये समय को टटोलता हूँ खुद को समझने के लिए

हाँ! कभी करते हुए काम निपटाता हूँ खुद को समझने के लिए

हाँ! कभी सोचते हुए संयोजनता हूँ खुद को समझने के लिए

हाँ! कभी किसीसे सलाह मशवरा करता हूँ खुद को समझने के लिए

हाँ! कभी पूछते हुए कहीं पहुंचता हूँ खुद को समझने के लिए

हाँ! कभी पढते हुए कहीं शास्त्र संवारता हूँ खुद को समझने के लिए

हाँ! किसीसे प्रीत से जुडता हूँ खुद को समझने के लिए

" Vibrant Pushti "

जीया ओ जीया कृष्ण आ जाओ आ जाओ

तरसते रहे है कब से तेरे इंतजार में

तुमसे हमने जी से जीया

जी से हमने दिल में बसाया

जीया ओ जीया आ जाओ जीया

बिन तुम्हारे नही जीये जीया

जीया ओ जीया कृष्ण आ जाओ आ जाओ

तरसते रहे है कब से तेरे इंतजार में

हमने तुम्हें अपना बनाया

तुमसे ही हमने दिल लगाया

जीवन मेरा तुमसे सजाया

पल पल मन तुझमें पिरोया

जीया ओ जीया कृष्ण आ जाओ आ जाओ

तरसते रहे है कब से तेरे इंतजार में

"Vibrant Pushti "

ओहहह कितने असाधारण है हम

मैं केवल इतना ही लिखता हूँ

"जय श्री कृष्ण "

ओहह! क्या हो गया

मुझमें सकारात्मकता जग गई

शायद आपको यही लिखा भेज दिया

आपने पढ लिया तो आपमें सकारात्मकता जग उठी

कितना श्रेष्ठ सिद्धांत सिद्ध हो गया

मुझमें जगी हुई सकारात्मकता मेरे लिखे आपको भेजने से आपमें जागी और उठी

यही ही सिद्धांत से हम क्या क्या हो सकते है

यही ही सिद्धांत से हम क्या क्या पा सकते है

ओहह श्री वल्लभ! कितनी सूक्ष्मता से हम चिंतन करले तो हम ....

पायोजी मैंने ब्रह्म रतन धन पायो

" Vibrant Pushti "

चलते चलते कहां कहां चले

इधर चले उधर चले

जिधर चले किधर चले

चलते चले चलते चले

पूर्व चले पश्चिम चले

उत्तर चले दक्षिण चले

चले चले चले चले

सोच के चले पहुंच के चले

कार्य रत चले बिन कार्य चले

निष्कर्ष चले उत्कर्ष चले

स्वरुप चले अरुप चले

प्रस्तुत चले विस्तृत चले

चलते ही चले चलते ही चले

ठहरते चले रुकते चले

जानते चले अंजानते चले

समझते चले असमंजसते चले

स्थिर चले अस्थिर चले

स्थायी चले अस्थायी चले

चलते बने चलते बने

क्या क्या हो कर चले

क्या क्या पा कर चले

क्या क्या खो कर चले

क्या क्या छोड कर चले

क्या क्या पकड कर चले

साथ चले अकेले चले

चले-चले   चले-चले

चले चलो चले चलो

" Vibrant Pushti "
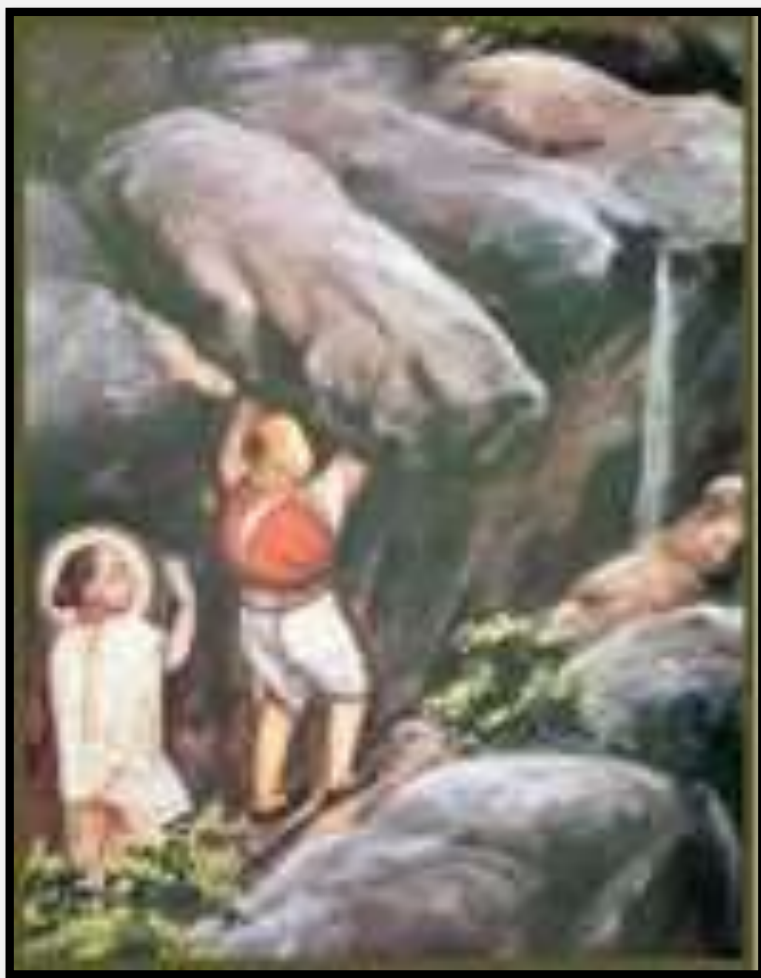
हवेली के मुख्या से मिले

बैठकजी के मुख्या से मिले

हर मुख्या बिमार

हर कोई मुख्या के गृह सभ्य कोई न कोई रीत से बिमार

हर हवेली बिस्मार

हर बैठकजी बिस्मार

कहीं ने चरण स्पर्श पाया है - हवेली का

कहीं ने झारीजी सेवा पायी है - बैठकजी की

हर हवेली अशुद्ध

हर बैठकजी अशुद्ध

क्या हमारे हवेली - बैठकजी के आचार्य अयोग्य है जो सौदेबाजी से निर्वाह करते है?

क्या उन्हें कोई जागृत अनुयायी की आवश्यकता है?

आपके मन और जीवन में अपने धर्म की रक्षा के लिए सही कदम उठाना हो तो अचूक खुद 84 वैष्णव के एक सिद्धांत चरित्र को अपना जीवन मार्गदर्शक बना कर खुद ही सेवा से जुड जाओ।

" Vibrant Pushti "

हाँ! कुछ तो है हमारी संस्कृति में

चाहे मिसर की संस्कृति से कुछ शिक्षित हो

चाहे बौद्ध की संस्कृति से कुछ शिक्षित हो

चाहे मंगोल की संस्कृति से कुछ शिक्षित हो

चाहे मुगल की संस्कृति से कुछ शिक्षित हो

चाहे आर्य की संस्कृति से कुछ शिक्षित हो

पर यह संस्कृतिओं के जो भी आचार्यों, वैज्ञानिको, तत्व ऋषियों, मंत्र महर्षियों, भाव भक्तों और आत्म वेदांतीओं हो गये उन्होंने ब्रहमांड के कहीं रहस्यों सिद्ध करके हमें जो ज्ञान, विज्ञान, सज्ञान और प्रज्ञान का सैद्धांतिक मनुष्य कला हमें रसस्व किया है तो भी हम अज्ञानी, विचलित, भिन्न, द्वैत, निम्न कोटि के!

क्यूँ ऐसा?

मान्यता भरे

अंधश्रद्धा भरे

प्रवाह भरे

भिन्नता भरे

पृथक भरे

तुटक भरे

काल्पनिक भरे

दोष भरे

स्वार्थ भरे

अनित्य भरे

अशुद्ध भरे

कपट भरे

मोह भरे

अहंकार भरे

अविद्या भरे

क्यूँ ऐसा?

" Vibrant Pushti "

मान्यता से जीये तो भी अमान्य में रहे

मान्यता की हर बात में अमान्य विवेचना

खुद माने वह सही मान्यता

ओर माने वह विवेचक मान्यता

मान्यता में जीये मान्यता में मरे

तो भी न छोडे मान्यता की मान्यता

खुद के सन्मान की सही मान्यता

ओर के सन्मान की विवेचक मान्यता

मान्यता में ही जीते जीते

खुद को मारे - औरों को मारे

मारते मारते भी माने मान्यता

सच! खुदगर्ज की भी है मर्यादा

पर, मान्यता में डूबे कैसे परिवर्तते मान्यता

जो मान्यता में जीवन कृतार्थे

न खुद को समझे न गैर को समझे

खुद को मिटते मिटते न मिटाये मान्यता

मान्यता में खूपे मान्यता में ही चल बसे

सच! जीवन की यह कैसी मान्यता

जो न माने मान्यता वह न साँस भरे सहजता

ओहह! मान्यता

" Vibrant Pushti "

हाँ! शायद हजारों साल पहले मनुष्यों के स्वभाव में विचारों की धारा का समन्वय मन के करीबी से होगा

हाँ! आज मनुष्यों के स्वभाव में विचारों की धारा का समन्वय मन से दूर होगा

क्यूँकि आज हम हमारें कौटुंबिक रिश्तेदारो से मिलते है तो कौटुंबिक अलगता की रीत ज्यादा परिणामीत पायेंगे

अगर

ऐसा नही पायेंगे तो कौटुंबिक रिश्तेदारो इन्हें चैन से जीने नही देंगे।

आज कुटुंब कुटुंब में बुजुर्ग को अभिशाप गिनते जाते है।

अरे एक दिन हम भी बुजुर्ग होने वाले है!

तो वंदन के साथ विनंती करता हूँ

हमारी संस्कृति के संस्कार को नष्ट करने से बेहतर है -

हम संस्कार को जागृत रखें

न किसीका उपहास करें

शायद! हमारे ही कुटुंब में कोई आचार्य जन्म लेने का संकल्प करते हो।

" Vibrant Pushti "

सूरज हर अवकाश में है

वायु हर अवकाश में है

जल हर अवकाश में है

आकाश हर अवकाश में है

केवल धरती हर अवकाश में नही है

अर्थात यही परिणामीत होता है की जीव सृष्टि वहीँ ही है जहां धरती है, कोई भी ग्रह ले ले। जिस ग्रह का बंधारण धरती से सम्मलित होगा वहां अवश्य जीवन सृष्टि है।

जो जीव सृष्टि में मानव जीव है वही धरती श्रेष्ठ धरती है क्यूँकि की यही ही धरती पर सिद्धांतों की सिद्धता, सिद्धांतों की प्रमाणितता, सिद्धांतों की सार्थकता और सिद्धांतों की सत्यता की अनुभूति और परिवर्तनता की जिज्ञासा यही ही उदभव होती है, जिससे हर जीव अपनी योग्यता से अपने आपको पहचान सके, सत्यता पा सके, खुद को पूर्ण पुरुषोत्तम कर सके।

सच! हे सत्यवेत्ता! आपने सही ही सर्वथा ब्रह्मांडो रचे है।

आज हम जो जो मात्रा में अक्षर ब्रह्म से - शब्द ब्रह्म से - नाद ब्रह्म से - स्पर्श ब्रह्म से - भाव ब्रह्म से - ...

जीव जीवन का सर्व श्रेष्ठ कक्षा - गुरु

मान्यता से भी श्रेष्ठ मान्यता - गुरु

खुद की जो भी कक्षा हो उनमें भी श्रेष्ठ - गुरु

स्थिर मन की श्रेष्ठता में बसे - गुरु

कितना भी कुट नितत्व हो पर नैन बसे - गुरु

कितनी भी घिन्नता भरी क्रिया जो आज्ञा में घूँट ले - गुरु

शिष्टता का सर्जन - गुरु

अनुयायियों का भेद मर्दन - गुरु

रोग निवार्दन - गुरु

भोग त्याजम - गुरु

श्रेष्ठ मार्गदर्शक - गुरु

आज के युग में श्रेष्ठ गुरु -

आज के युग में श्रेष्ठ शिष्य -

आज के युग की श्रेष्ठ विद्या -

आज के युग की श्रेष्ठ मान्यता -

आज के युग की श्रेष्ठ धर्मता -

हे मेरे मूरत में बसे गुरु - साक्षात दंडवत प्रणाम! ???

हे मेरी मन में रहे गुरु - साक्षात वंदन

हे मेरे तन के पुरुषार्थी गुरु - साक्षात नमस्कार

हे मेरे धन के उद्योगी गुरु - साक्षात पाय लागु

" Vibrant Pushti "

छूप छूप कर निहाल रहा था
दूर दूर तक कोई एक को झांख रहा था
कभी बादलों के बीच में
कभी पैडो की पत्ति में
हाँ! कोई एक को
हाँ! कोई खास को
कभी खुद मचलता था
कभी पलकें पट पटा रहा था
कभी खुद को छूपा रहा था
कभी कोई कहीं से देख रहा था
वायु की चंचलता में चलता था
बादलों की उडान में उडता था
तारों की टिमटिमा में टिमाता था
सच! तडपता था
जागता था
दौडता था
मेरी चाल से वह रुका
पूछने लगा कहां चले
साथ चलने चलाने वादा करे
यूँही प्रीत निभाने का वादा कर

" Vibrant Pushti "

हम जो भूमि पर रहते है - जहां हमने बचपन खेला - शिक्षा पायी - जवानी जीयी - और अब भी जी रहे है - जो भी परिस्थिति में - जो भी साथीओ के साथ। यह भूमि को हम हमारा घर कहते है। जो हमारा सदा आश्रय स्थान है - जहां हम स्थिरते है - जहां हम जीवन जीते है - अर्थात यह हमारी मर्म भूमि है - कर्म भूमि है - धर्म भूमि है।

जहां हमने शांति पायी - जहां हमने धर्म पाया - जहां हमने लक्ष्मी पायी - जहां हमने विद्या पायी - जहां हमने पुरुषार्थ पाया।

हम थोडी देर के लिए सोचे -

यह मेरी भूमि है।

तो यह भूमि कैसी होनी है?

तो यह भूमि कैसी करनी है?

तो यह भूमि कैसी धरनी है?

तो यह भूमि कैसी सिंचनी है?

सोच लो!

भूमि - एक ऐसा साधन है जो हमें भगवान बना देता है

जैसे व्रज भूमि

जैसे हिमालय

जैसे धर्म क्षेत्र

सच! कहे तो हमने भी जो भूमि पर आवास पाया है वह भूमि भी क्षेत्र हो सकता है।

पर

आज हम यह ...

सूरज हर रोज उगता है

अविरत

अविराम

नित्य

जो सदा अग्नि है

वनस्पति हर रोज उगती है

कोई भी स्थली

कोई भी रज

कोई भी जगह

जो सदा औषधि है

सागर हर रोज बहता है

कोई भी किनारा

कोई भी तट

कोई भी ओवारा

जो सदा अमृत है

धरती हर रोज घुमती है

कोई भी अक्षांश

कोई भी अवकाश

कोई भी ब्रह्मांड

जो सदा पुरुषार्थी है

वायु हर रोज लहराता है

कोई भी मूलत्व

कोई भी क्रिया

कोई भी एकीकृत

जो सदा संयोजित है

आकाश हर से अगणित है

कोई भी संरचना

कोई भी समाये

कोई भी प्रयोग

जो सदा स्वीकृत है

सच! क्या क्या हमने पाया है

सच! क्या क्या हमें जगाता है

सच! क्या क्या हमें संस्कृतता है

सच! एक तिनके के हम तो भी हम क्या क्या कर सकते है!

हे प्रभु! आपका यह रहस्य हमें पा कर हमें तुमसे सहभागी होना है

हे प्रभु! सदा पुरुषार्थी रखना

हे प्रभु! सदा एकाकार धराना

हे प्रभु! सदा अग्नि प्रजवलना

हे प्रभु! सदा स्वीकृति स...

कितनों से मिला

कहींओ से मिला

कैसे कैसे मिला

क्यूँ क्यूँ मिला

कहां कहां मिला

क्या क्या सुना

क्या क्या कहा

क्या क्या सोचा

क्या क्या समझा

क्या क्या किया

कभी सिर्फ अकेले अकेले हो कर सोचना

यह एक तपस्या है जो हमें कुछ ज्ञात करायेगा की हम कौन है? हम कैसे है?

जो भी भक्त होते है तो उन्हें सबमें भक्ति ही निहाला है

जो अधूरे है तो उन्हें सबमें अधुरापन ही दिखेगा

जो संसारी है तो उन्हें सबमें संसार ही पायेगा

" Vibrant Pushti "

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - ऊर्जा (पंचम)

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

" *Vibrant Pushti* "

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "